अहमद व मोहम्मद की प्रस्तुतियों ने जमाया रंग



कार्यक्रम में गजल गाते अहमद हुसैन व मोहम्द हुसैन● जागरण

- भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में 'याद-ए-बेगम अख्तर' कार्यक्रम का आयोजन
- कलाकारों ने कहा- संगीत की सेवा के लिए उसके प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक

जासं, लखनऊ : भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय के कलामंडपम सभागार में गुरुवार को पद्मभूषण बेगम अख्तर की पुण्यतिथि पर 'याद-ए-बेगम अख्तर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रख्यात गजल गायक व पद्मश्री सम्मान से सम्मानित उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मुग्ध किया।

प्रस्तुतियों का श्रीगणेश 'गाइए गणपति जगवंदन' से हुआ। इसके बाद अहमद हुसैन और मोहम्मद हुसैन ने शकील बदायूंनी की रचना 'दूर है मंजिल, राहें मुश्किल, आलम है तन्हाई का' प्रस्तुत की। उन्होंने 'चल मेरे साथ ही चल, ऐ मेरे जाने गजल', 'यूं ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर में रहा करो', 'मौसम आएंगे-जाएंगे, हम तुमको भूल न पाएंगे', 'आया तेरे दर पर दीवाना जैसी रचनाओं की प्रस्तुतियों से रंग जमाया। दोनों कलाकारों ने कहा कि संगीत की सेवा के लिए उसके प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक है। संगीत साधना में निरंतर अभ्यास, अनुशासन और धैर्य का विशेष महत्व है। उन्होंने विद्यार्थियों को गुरु के सान्निध्य में रहकर संगीत सीखने और गुरु-शिष्य परंपरा के मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने कहा कि पद्मभूषण बेगम अख्तर भारतीय संगीत जगत की महान विभूति थीं।